छठी शताब्दी ई०पू० में धार्मिक सुधार-आन्दोलन के उदय के कारणों का उल्लेख करें ?

ईसापूर्व छठी शताब्दी मानव-इतिहास में विशिष्ट स्थान रखता है इस युग में विश्व के विभिन्न भागों में अद्भुत बौद्धिक तथा चिन्तन के के आन्दोलन आरम्भ हुए जिसके फलस्वरूप मनुष्य के धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन प्रारम्भ हुए यह क्रान्ति विश्वव्यापी थी। यूनान से लेकर चीन तक, भूमध्यसागर से प्रशान्तमहासागर तक विचारकों का प्रादुर्भाव हुआ जो लौकिक और पारलौकिक समस्याओं का चिन्तन किया। यह चिन्तन रूढ़िवादी के विरोध में विद्रोह था जिससे समाज में उथल-पुथल मच गई।

भारत के इतिहास में यह शताब्दी ऐसी क्रान्ति की युग थी जिससे समाजिक, राजनीतिक, धार्मिक - तीनों क्षेत्रों में प्रस्फुटित हुई।

इस धार्मिक क्रान्ति के कई कारण थे

धार्मिक जटिलता → वैदिककाल का धर्म अत्यंत सरल था परन्तु कालान्तर में यह अत्यंत जटिल हो गया था वैदिक काल के लोग प्रकृति पूजा करते थे परन्तु अब [illegible] ईश्वरवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन होने लगा धार्मिक भावना इतनी गूढ़

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

15 Thursday

हो गई कि लोगों के लिए वह अबोधगम्य था। अगम्य हो गई। ब्राह्मणों की सत्ता सर्वोपरि हो गई समाज पर इनका घोर दबदबा कायम हो गया लोग अनेक प्रकार के आडम्बरों में जीवन व्यतीत करने लगे तथा अपनी सत्ता अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए अंधविश्वासों, कुरीतियों, भूत-प्रेत जादू-टोने आदि का सहारा लेने लगे।

जनता निराशा के गहन अंधकार में भटकने लगी और उसमें धीरे-धीरे धार्मिक-एवं सामाजिक व्यवस्था के प्रति असंतोष उत्पन्न होने लगा। लोग वर्ण व्यवस्था के कठोर नियमों तथा बढ़ती छुआ-छूत तथा अन्य कुरीतियों से घबराने लगे। वे इस जटिल धर्म के विरुद्ध प्रतिक्रिया होने लगी क्योंकि यह जटिल जटिल धर्म लोककल्याण में असमर्थ था।

16 Friday

कर्मकाण्ड की प्रधानता → वैदिक धर्म में कर्मकाण्ड की प्रधानता थी बहुत से देवी-देवताओं की कल्पना
ी गई थी और उनकी पूजा होती थी। यज्ञ होता था और
क कोई यज्ञ तो कई-कई वर्षों चलता रहता था
म से मृत्यु तक यज्ञों से छुटकारा नहीं मिलता था
ों के बौद्धिक विकास पर प्रतिबन्ध लगा गया था लोगों
उदासीनता होने लगी और वे वास्तविक धर्म के उदय
प्रतीक्षा करने लगे।

Saturday 17

पुरोहितों का प्रभाव → समाज में पुरोहितों का प्रभाव तथा आडम्बर बढ़ गये तथा ब्राह्मणों की सत्ता पुनः से स्थापित हो गयी, ब्राह्मणों का ढोंग धीरे-धीरे बढ़ता गया और वे समाज के बंधक बन गये ब्राह्मणों के आडम्बर और ढोंग के विरुद्ध प्रतिक्रिया होने लगा क्षत्रियों ने इस विरोध का नेतृत्व ग्रहण किया।

वर्णव्यवस्था में विषमता → धर्म, समाज, राजनीति सभी क्षेत्रों में ब्राह्मणों की तूती बोल रही थी वैदिक ज्ञान पर वे अपना एकाधिकार समझते थे वेद के मामले में उनका को विरोध नहीं कर सकता था इस कारण समाज के अन्य तीन वर्णों के लोगों में धीरे-धीरे प्रतिक्रिया होने लगी

Sunday 18

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA